

मैथिलीशरण गुप्त का महाकाव्य 'साकेत' : एक जीवन-दर्शन

नरेश कुमार

व्याख्याता, हिंदी

राजकीय महाविद्यालय

कालाडैरा (जयपुर)

भूमिका/प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में मैथिलीशरण गुप्त का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने अपनी काव्य कृतियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, मूल्यों और आदर्शों को नया जीवन दिया। 'साकेत' उनका एक ऐसा महाकाव्य है जिसमें रामकथा को उर्मिला के दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हुए गहन जीवन-दर्शन की स्थापना की गई है। यह ग्रंथ केवल धार्मिक या पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि यह जीवन की नैतिकता, कर्तव्य, त्याग, सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व का दर्पण है।

1. साकेत में वर्णित जीवन-दर्शन : एक समग्र दृष्टिकोण:-

'साकेत' में वर्णित जीवन-दर्शन भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं में निहित मूल्यों का काव्यात्मक स्वरूप है। यह दर्शन मनुष्य के आचरण, कर्तव्यों, भावनाओं और आत्म-नियंत्रण के आदर्शों पर आधारित है।

कर्तव्यपरायणता: गुप्त जी ने अपने पात्रों के माध्यम से यह दर्शाया है कि कर्तव्य जीवन का आधार है। राम का पिता की आज्ञा के लिए वन जाना, भरत का सिंहासन अस्वीकार करना, लक्ष्मण का भ्रातृसेवा और उर्मिला का संयमित जीवन सभी कर्तव्य के आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

त्याग और तपस्या: 'साकेत' में त्याग को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। उर्मिला का अकेले अयोध्या में रहना, अपनी इच्छाओं और प्रेम की भावनाओं का त्याग कर धर्मपालन करना, गुप्त जी की दृष्टि में सच्ची तपस्या का उदाहरण है। यह त्याग आत्मविकास और आत्मानुशासन का प्रतीक बन जाता है। उर्मिला, लक्ष्मण, राम, और भरत—सभी पात्र किसी न किसी रूप में त्याग और तपस्या की प्रतिमूर्ति हैं।

उर्मिला का त्याग और तपस्या: लक्ष्मण के वनगमन के समय उर्मिला का समर्पण मौन और गहन है। वह बाह्य रूप से भले ही अयोध्या में हों, पर उनका जीवन आत्मनियंत्रण और एकांत की तपस्या में बीतता है। यह त्याग केवल वैवाहिक जीवन का नहीं, अपितु आत्मिक संतुलन और गृहस्थ धर्म का है।

राम का त्याग: राम ने राज्य, सुख-सुविधा और पारिवारिक जीवन त्याग कर पिता की आज्ञा का पालन किया। उनका त्याग मर्यादा पुरुषोत्तम की भूमिका को सिद्ध करता है। यह त्याग केवल बाह्य नहीं, आत्मबलिदान की भी अभिव्यक्ति है।

भरत का आत्मत्याग: भरत ने न केवल सिंहासन त्यागा, बल्कि एक प्रतीकात्मक नेतृत्व को स्वीकार किया। उनका यह त्याग कर्तव्यबोध और नैतिक बल का सर्वोच्च उदाहरण बन जाता है।

लक्ष्मण का आत्मनियंत्रण: लक्ष्मण ने अपने व्यक्तिगत सुख को त्यागकर भाई की सेवा में तपस्वी जीवन बिताया। उनका यह आत्मनियंत्रण वैराग्य और सेवा के संगम का स्वरूप है।

इस प्रकार 'साकेत' में त्याग और तपस्या केवल भौतिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और मानसिक स्तर पर दिखाई देता है। यह त्याग भारतीय जीवन-दर्शन की उस धारा का प्रतीक है जिसमें व्यक्ति स्वयं को समाज और धर्म के हित में अर्पित करता है।

2. साकेत में नारी का जीवन-दर्शन: मैथिलीशरण गुप्त ने नारी के सहनशील, बौद्धिक और आत्मनिर्भर स्वरूप को 'साकेत' में प्रमुखता से स्थान दिया है। उर्मिला, सीता, सुमित्रा, कौशल्या—ये सभी पात्र नारी शक्ति की विविध छवियाँ हैं। उनका जीवन संयम, मर्यादा और सेवा की भावना से परिपूर्ण है।

उर्मिला: त्याग और नारी चेतना की प्रतीक

उर्मिला 'साकेत' की केंद्रीय और सर्वाधिक प्रेरणादायक पात्रों में से एक हैं। उनका जीवन और व्यक्तित्व त्याग, धैर्य, कर्तव्यनिष्ठा और नारी चेतना का प्रतीक है। मैथिलीशरण गुप्त ने उर्मिला को केवल एक त्यागमयी पत्नी नहीं, बल्कि एक संवेदनशील, विवेकशील और आत्मबल से संपन्न नारी के रूप में चित्रित किया है।

त्याग का सर्वोच्च आदर्श: जब लक्ष्मण राम के साथ वनगमन करते हैं, तब उर्मिला बिना किसी विरोध या विषाद के उन्हें धर्मपालन के लिए विदा करती हैं। वह अपनी भावनाओं को आत्मसात कर गृहस्थ धर्म और कर्तव्य का निर्वहन करती हैं। उनका यह त्याग भौतिक उपस्थिति से नहीं, बल्कि मानसिक और आत्मिक सहभागिता से जुड़ा है।

मौन तपस्या का स्वरूप: उर्मिला का त्याग केवल बाहरी नहीं, एक गहन अंतःताप का प्रतीक है। वह बिना किसी प्रशंसा की आकांक्षा के अपने कर्तव्यों का पालन करती हैं। गुप्त जी ने उन्हें 'गृहस्थाश्रम की साध्वी' कहकर सम्मानित किया है, जो घर में रहकर भी वनवासी जीवन की कठिन तपस्या करती हैं।

नारी चेतना का जागरण: उर्मिला नारी चेतना की प्रतीक इसलिए भी हैं क्योंकि उन्होंने अपने अधिकारों और भावनाओं को मर्यादा के भीतर रखकर समाज के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया। वह एक ऐसी स्त्री हैं जो पति की अनुपस्थिति में भी मानसिक रूप से दृढ़, सामाजिक दृष्टि से सक्रिय और आत्मबल से युक्त हैं। उनका जीवन नारी की आंतरिक शक्ति और

सामाजिक चेतना का सुंदर उदाहरण है।

प्रेरणा का स्रोत: उर्मिला के माध्यम से गुप्त जी यह संदेश देते हैं कि नारी केवल सहनशील और त्यागमयी नहीं होती, बल्कि वह संस्कार, संस्कृति और समाज की संरक्षक भी होती है। उर्मिला का जीवन आज की नारी के लिए भी प्रेरणादायक है जो आत्मसम्मान, धैर्य और कर्तव्य के पथ पर अग्रसर होना चाहती है।

3. 'साकेत' में जीवन-दर्शन की काव्यात्मक प्रस्तुति

'साकेत' की सबसे विशेष बात यह है कि जीवन-दर्शन को केवल विचारों में नहीं, बल्कि काव्यात्मक सौंदर्य में प्रस्तुत किया गया है। मैथिलीशरण गुप्त ने छंदों, प्रतीकों, उपमाओं और अनुप्रासों का प्रयोग करते हुए न केवल भावनात्मक गहराई उत्पन्न की है, बल्कि जीवन के गंभीर तत्त्वों को भी सरलता और सौंदर्य के साथ प्रकट किया है।

छंद और शैली: गुप्त जी ने 'साकेत' में खड़ी बोली हिंदी का अत्यंत सरल, सरस और प्रवाहपूर्ण उपयोग किया है। उनका छंद विधान संस्कारपूर्ण है, जो पाठक को गहराई से प्रभावित करता है। जीवन की कठोर सच्चाइयों को भी वे मधुर भाषा में इस प्रकार कहते हैं कि वह मन को आंदोलित कर देती है।

प्रतीकात्मकता: 'साकेत' में प्रयुक्त प्रतीकों जैसे – अयोध्या (धर्म और संस्कृति का केंद्र), वनवास (त्याग और तपस्या), उर्मिला (गृहस्थ जीवन की साध्वी) – के माध्यम से गुप्त जी ने जीवन के विविध पहलुओं का बिंब प्रस्तुत किया है।

उपमाएं और भावात्मक चित्रण: उर्मिला के मन की पीड़ा, लक्ष्मण की दृढ़ता, राम का त्याग-इन सबका वर्णन ऐसे उपमाओं और चित्रों से किया गया है जो पाठक के मानस में एक अमिट छवि छोड़ जाते हैं।

काव्य में नैतिक शिक्षा: 'साकेत' केवल सौंदर्यपूर्ण काव्य नहीं, बल्कि नैतिक शिक्षा का भी भंडार है। प्रत्येक प्रसंग जीवन का कोई महत्वपूर्ण पाठ सिखाता है-जैसे त्याग, धैर्य, सेवा, मर्यादा और परोपकार। यह काव्य रस और धर्म का सुंदर संगम है।

4. आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता

आज का युग अत्यधिक भौतिकतावादी, प्रतिस्पर्धात्मक और व्यक्तिगत लाभ की भावना से ग्रस्त है। ऐसे समय में 'साकेत' का जीवन-दर्शन हमें स्मरण कराता है कि सच्चे सुख और संतोष का मार्ग आत्मसंयम, कर्तव्यपालन और त्याग में निहित है। गुप्त जी के पात्र, विशेष रूप से उर्मिला, हमें यह दिखाते हैं कि मानसिक बल, धैर्य और आत्मबल आधुनिक जीवन की जटिलताओं का सामना करने के लिए कितने आवश्यक हैं।

नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना: 'साकेत' हमें यह शिक्षा देता है कि समाज तभी स्थिर और समुन्नत हो सकता है जब उसके नागरिक अपने कर्तव्यों और मर्यादाओं का पालन करें। यह आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक है, जब नैतिकता और

पारिवारिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है।

नारी सशक्तिकरण का आदर्श: उर्मिला का चरित्र आज की नारी के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है जो पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए भी आत्मनिर्भर, विवेकशील और सामाजिक रूप से जागरूक हो सकती है। यह स्त्री-चेतना के आधुनिक विमर्श से जुड़ा है।

कर्तव्य बनाम अधिकार की संतुलित दृष्टि: आज के युग में जहाँ अधिकारों की चर्चा अधिक होती है, वहीं 'साकेत' यह सिखाता है कि कर्तव्य के बिना अधिकार अधूरा है। राम, लक्ष्मण और उर्मिला सभी अपने कर्तव्य को प्राथमिकता देते हैं, जो आज के सामाजिक और राजनीतिक विमर्शों में संतुलन का संदेश देता है।

आध्यात्मिक शांति का संदेश: मानसिक तनाव, अकेलापन और चिंता आज के समाज की सामान्य समस्याएं हैं। 'साकेत' के पात्रों के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि आत्मसंयम, साधना और सेवा से ही सच्ची आत्मिक शांति संभव है।

इस प्रकार, 'साकेत' केवल अतीत का गौरव नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य का पथप्रदर्शक है। यह महाकाव्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना अपने रचनाकाल में था।

5. निष्कर्ष

'साकेत' केवल एक काव्यकृति नहीं, बल्कि जीवन की एक आदर्श परिकल्पना है। मैथिलीशरण गुप्त ने इसे जीवन-दर्शन का ऐसा स्वरूप प्रदान किया है जिसमें व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र सभी के लिए मार्गदर्शन निहित है। उर्मिला जैसे पात्र नारी शक्ति, त्याग और चेतना के उज्ज्वल प्रतीक हैं, जिनसे आज भी हम प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। 'साकेत' की काव्यात्मक अभिव्यक्ति इस जीवन-दर्शन को इतना प्रभावशाली बनाती है कि वह पाठक के अंतर्मन में उतर जाता है और उसे आत्मविश्लेषण के लिए प्रेरित करता है।

संदर्भ सूची:

गुप्त, मैथिलीशरण. 'साकेत'. लोकभारती प्रकाशन।

शुक्ल, रामचंद्र. 'हिंदी साहित्य का इतिहास'। नागरी प्रचारिणी सभा।

मिश्र, विद्यानिवास. 'भारतीय काव्यशास्त्र'। साहित्य भवन।

सिंह, नामवर. 'आधुनिक हिंदी कविता की भूमिका'। राजकमल प्रकाशन।

त्रिपाठी, राधावल्लभ. 'महाकाव्य और संस्कृति'। भारतीय ज्ञानपीठ।

सोनेने डॉ. त्रिवेणी नारायण 'साकेत में अभिव्यक्त जीवन दर्शन' विकास प्रकाशन

डॉ नगेंद्र सिंह : 'मैथिली शरण गुप्त और उनका काव्य'
प्रो.विश्वनाथ त्रिपाठी 'साकेत': शिल्प और संदेश
डॉ रामविलास शर्मा : 'साकेत' एक आलोचनात्मक अध्ययन